प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

अपने स्वयं के लक्ष्यों की ओर क़दम बढ़ाते हुए भी तुम्हारे लिए यह हमेशा सम्भव है कि तुम दूसरों के लिए प्रकाश का पथ बनाते चलो जिस प्रकाश में वे अपने अनूठे जीवन को फलते-फूलते हुए देख सकें। याद रखो कि तुम्हारे सीने में एक स्पर्शनीय, पावन ऊर्जा है—आदि नाद जो तुम्हें गतिमान होते रहने के लिए, आगे बढ़ते रहने के लिए, उन्नत होते रहने के लिए प्रोत्साहित करता रहता है।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।